International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 3, May-Jun, 2023, Impact Factor: 7.326

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के आदिवासी विद्यार्थियों में व्यवसायिक पाठ्यक्रम के चुनाव के प्रति रूचि का अध्ययन

शशि कुमारी तिर्की[1], शुभ्रा ठाकुर[2]

[1]शोधार्थी, आइसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग
[2]सहायक प्राध्यापक, आइसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग

सार–संक्षेप

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है, इससे वह समाज का एक उतरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में योगदान करता है। शिक्षा और जीवन अन्योन्याश्रित है। शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा की प्रकृति और समाज के उद्देश्यों पर निर्भर करते है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों द्वारा लिये गये उचित निर्णय उनके भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण आधार बनाता है। अच्छे ब्यवसाय उस स्तर पर अधिक आश्यक होता है जब किशोर शिक्षा ग्रहण कर रहा होता है और उसे प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि वह समाज में कोई लाभकारी और उत्पादक भूमिका निभा सके। हमारे देश की जनजातियां, जो कि देश के कई स्थानों पर स्थानों पर फैली हुई है तथा समाज की मुख्यधारा से कटी हुई है। भारत की मुख्य जनजाति क्षेत्र अभी भी सांस्कृतिक, सामाजिक एवं तकनीकी विकास से बहुत अलग–अलग है विशेष कर जंगलों, पहाड़ों, पठारों एवं रेगिस्तानी क्षेत्र; जो देश के विशिष्ट हिस्से हैं एवं राष्ट्रीय आय के स्रोत हैं, पिछड़े हैं। भारत की एक बहुत बड़ी जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत अभी भी विकास तभी होगा, जब उन्हें भी विकास की मुख्य धारा में शामिल किया जा सकता है। झारखण्ड में 32 अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती है, जो दो भाषाओं समूहों, द्रविड़, आर्य एवं आस्ट्रो एशियाई समूहों में विभाजित है जिनमें संथाल, मुंडा, उरांव और हो प्रमुख है। आंकडों के आधार परव्यवसायिक रूचि संबधी आंकड़ो के विवरण में हम पाते हैं कि कलात्मक ब्यवसाय के प्रति बच्चों में ज्यादा रूझान (संख्या 119) प्रतीत होता है जो संपूर्ण आंकडे का 29.75% है। पुनः आंकडे दर्शाते हैं कि छात्रों को संख्या (64)तथा छात्राओं की संख्या (55) में ज्यादा अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द– अनुसुचित जनजाति, ब्यवसायिक रूचि,कलात्मक, अन्वेष्णात्मक

प्रस्तावना :–

शिक्षा लक्ष्ययुक्त बनाने से विद्यार्थियों में उस लक्ष्य को पाने की ललक, उनमें मानसिक उद्वेलन, तनाव तथा असफल होने की सम्भावना उन्हें निर्देशन की ओर मोड़ देती है। हर विद्यार्थी का पहला लक्ष्य अच्छी शिक्षा अर्जित करने, अच्छे व्यवसाय की ओर उन्मुख होना होता है। प्रथम लक्ष्य को अर्जित करने की दृष्टि से हर विद्यार्थी अपनी रुचि, आकांक्षा और अभियोग्यता के अनुसार उसे करने में अपनी क्षमता व्यय करते हैं। उन्हें अनिश्चितता की स्थिति प्रतीत होने पर लक्ष्य हासिल करने का एक महत्वपूर्ण रास्ता निर्देशन तथा परामर्श अलग–अलग नामों से विद्यालयों में जाना जाता है। व्यावसायिक रुचि विद्यार्थी के मन में उत्साह, आत्मानिर्भरता तथा सफलता की मंजिल तक पहुँचने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। आने वाली हर समस्या के यथायोग्य समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है और हताशा, निराशा को नई उमंग, उत्साह में बदल कर उसे अपनी योजना

के अनुरुप लक्ष्य अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में छात्रों को स्वावलम्बी बनाने हेतु पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ने पर बल दिया है। इसका उद्देश्य शिक्षा को रोजगार उन्मुख बनाना, उच्च शिक्षण संस्थाओं पर दवाब कम करना तथा रोजगार के अवसर व कुशल मानव शक्ति की मांग व पूर्ति में संतुलन बनाना है। राष्ट्रीय स्तर पर 10+2 स्तर के 1990 तक 10 तथा आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक 100 में सें 20 छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।ऐसा कहा जाता है कि **जीविका निर्माण से जीवन–निर्माण अधिक महत्वपूर्ण है।** यह कहावत व्यवसाय के महत्व को घटा देती है, परन्तु इस कहावत में दार्शनिक पक्ष अधिक है, व्यवहारिक कम। जीवन निर्माण एवं जीविका निर्माण एवं जीविका कभी भी पृथक–पृथक नहीं देखे जा सकते हैं, साथ ही साथ जीवन निर्माण जीविका पर प्रत्यक्ष रुप से निर्भर है। इस प्रकार सामाजिक जीवन निर्माण जीविका पर प्रत्यक्ष रुप से निर्भर है।आज का युग युवाओं का युग है और उन्हें सुनहरे कल के लिये ऐसी शिक्षा या प्रशिक्षण की आवश्यकता है जो उन्हें रोजगार दे सके ताकि उनका भविष्य सुनिश्चित हो सके। युवाओं में प्रतिभा होती है, परन्तु उनकी इस प्रतिभा को पहचान कर उन्हें सही दिशा देने की आवश्यकता है। आज के शिक्षक को उनकेमार्गदर्शन में सैद्धान्तिक गुरु न होकर व्यवहारिक प्रशिक्षक भी होना चाहिए। आधुनिक समय में कैरियर का क्षेत्र व्यापक रुप से खुला है, किन्तु युवाओं का एक बड़ा वर्ग दिगभ्रमित होने से बेरोजगारी से ग्रस्त है।

शोधों का पुनरावलोकनः

राजेश कुमार सिंह (2002) के शोध अध्ययन जनजातीय समुदायों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्त्तन व राँची जिला के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों को आधार बनाकर किया है। इनसे स्पष्ट होता है कि जनजातीय विकास को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक शिक्षा का अभाव है।

जॉज, ई आई (1968) ने–महाविद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समस्याओं और आवश्यकतओं के सम्बध मेंएक अध्ययन विषय पर शोध कार्य केरल विश्वविद्यालय में किया। इस शोध का उदेश्यः विद्यार्थियों की समस्याओं और आवश्यकताओं तथा अवसरों का पता लगाना और समस्याओं को हल करना था और निष्कर्ष में पाया कि विद्यालय और महाविद्यालय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और समस्याओं के मध्य अनुरुपता पायी गई। दोनो ही प्रकारके विद्यार्थियों में आर्थिक, शैक्षिक व व्यावसायिक क्षेत्रों, अध्ययन की आदतो, व्यक्तिगत और सामाजिक क्षेत्रों के लिये समस्याओं की उच्च तीव्रता पायी गई। प्रमुख रुप से व्यावसायिक और शैक्षिक क्षेत्रों में निर्देशन की आवश्यकता पायी गई।

शोध के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं उनके अभिभावक के शैक्षणिक योग्यता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।प्रस्तुत अनुसंधान में जनसंख्या या समग्र से तात्पर्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों के आदिवासी विद्यार्थियों से है तथा उनके व्यवसायिक रूचि के चुनाव में उसपर पड़ने वाले प्रभावों के आंकलन का अध्ययन करने से है। प्रस्तुत शोधकार्य में हजारीबाग शहर में स्थित उच्च माध्यमिक विद्याालयों (सरकारी एवं निजी) की कक्षाओं में अध्ययनकर्ता ने कक्षा 10वीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।कुल 400 प्रतिदर्श का चयन इस कार्य के लिए किया गया। जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। यह शोध हजारीबाग जिले के अनुसूचित जनजातियों के व्यवसायिक चुनाव से संबंधित है।प्रस्तुत अध्ययन में व्यवसाय के प्रति रूचि को ध्यान में रखते हुए एक सूचि का प्रयोग किया गया। इस सूचि का निर्माण एवं मानकीकरण जॉन हॉलैण्ड ने किया है। इस सूचि को वोकेशनल इनट्रेस्ट के नाम से जाना जाता है। जॉन हॉलैण्ड के कार्यो को

"जर्नल ऑफ कॉउन्सेलिंग साइकोलॉजी" में प्रकाशित किया गया। हॉलैण्ड ने 'व्यवसायिक व्यक्तित्व' तथा कार्यक्षेत्र पर कई कार्य किये ।

तालिका– 1 विधार्थीयों के विभिन्न व्यवसायीक रूचियों के आंकड़े का विवरण

लिंग आधारित विद्यार्थी	व्यवसायीक रूची						
	यर्थाथवादी	अन्वेष्णात्मक	कलात्मक	सामाजिक	उद्यमी	पारंम्परिक	कुल
छात्रों को संख्या	26	08	64	52	36	14	200
छात्राओं की संख्या	30	6	55	46	47	16	200
कुल	56	14	119	98	83	30	400

तलिका विवरण –

- उपरोक्त आंकडों के आधार परव्यवसायिक रूचि संबधी आंकड़ो के विवरण में हम पाते हैं कि कलात्मक ब्यवसाय के प्रति बच्चों में ज्यादा रूझान (संख्या 119) प्रतीत होता है जो संपूर्ण आंकडे का 29.75% है। पुनः आंकडे दर्शाते हैं कि छात्रों को संख्या (64)तथा छात्राओं की संख्या (55) में ज्यादा अंतर नहीं है।
- तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि द्वितीय तथा त्रीतीय स्थान क्रमशः सामाजिक (98) तथा उद्यमी (83) को प्राप्त है। ऐसे व्यक्ति लोगों से मेलजोल रखना उनके संपर्क में रहकर उन्हें अपने सांचे से अवगत कराने वाले होते हैं। ये वाचाल तथा अपनी भाषा तथा संप्रेषण कौशल से लोगों को प्रभावित करने वाले होते हैं।
- अन्वेष्णात्मक क्षेत्र को न्युनतमस्थान (14) प्राप्त है जो 3.5% है । उपकरण में रूचियों की व्याख्या के अनुसार यह क्षेत्र खोज करने, शोध करने, अवलोकन करने, प्रयोग करने, प्रश्न पूछने तथा समाधान वाले होते हैं। इनके विचार विश्लेषणात्मक तथा तार्किक होते हैं।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि लिंग के आधार पर एवं उनके अभिभावक के शैक्षणिक योग्यता के मध्य संबंध में सार्थकता की जाँच

अभिवावक की शैक्षणिक योग्यता	*समुह*	*सहसम्बन्ध गुणांक*	*प्रायकिता मान P-value*
अस्वीकृत केन्द्रित	छात्रा	0.79	0.2
	छात्र	0.89	0.3
स्वीकृत केन्द्रित	छात्रा	0.68	0.1
	छात्र	0.55	0.09

निष्कर्ष

हजारीबाग जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के आदिवासी छात्र छात्राओं पर अभिभावक की शैक्षणिक योग्यता का उनके व्यवसायिक रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव के बीच सहसंबध गुणांक यह दर्शाता है कि छात्राओं तथा

छात्रों के बीच अन्तर प्राप्त नहीं होता है जहाँ छात्राओं में सहसंबध गुणांक स्वीकृत केन्द्रीय पर 0.68 है वही छात्रों पर 0.55 के आंकड़े प्राप्त हुये जो मध्य धनात्मक संहसंबध गुणांक को प्रदर्शित करता है। प्रायकिता मान (P<0.05) पर 0.1 (छात्राओं के लिये) 0.09 (छात्रों के लिये) प्राप्त हुये। तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि अस्वीकृत केद्रित अभिभावक का शैक्षणिक योग्यता का विद्यार्थीयो के व्यवसायिक रूचि के मध्य सहसंबध गुणांक छात्राओं में 0.79 तथा छात्रों मे 0.89 प्राप्त हुये। यहाँ पर स्वीकृत एवम् अस्वीकृत बनाम आंकड़ो के मध्य अन्तर प्राप्त हुआ । छात्राओं तथा छात्रों के आंकडे यह भी दर्शाते हैं कि अभिभावक की शैक्षणिक योग्यता का बच्चों के व्यवसायिक चुनाव पर कम प्रभाव डालते हैं जो यह बताता है कि आजकल बच्चों की सोंच आजाद है और वे अपनी व्यवसाय के प्रति स्वतंत्र हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 हीगड, सुरेखा (2016) : ''माध्यमिक विद्यालयी में पाठ्य–सहगामी प्रवृतियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृद्धि का अध्ययन'', शोध समग्र, Vol II (2) ISSUE-6 June 2016, Pag.No.-68-79
2. वालिका जे0एस0 (2014–15) : ''शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार ''अहम पाल पब्लिशन, पंजाब, पृ0सं0–558–561
3. सक्सेना आर एस0 : ''उदायीमन भारतीय समाज में शिक्षा का आधार एवं विकास ''आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, पृ0सं0–665–671
4. सक्सेना एन0आर0 स्वस्प (2004) : ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0–430
5. सिंह, राजेश कुमार (2002) : ''शोध प्रबंध जनजातीय समुदायों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन'' राँची विश्वविद्यालय, राँची, पृ0सं0–10
6. अम्बष्ठ, नवल किशोर (1970) : ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ ट्राइबल एजुकेशन एस0 चाँद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, पृ0सं0–66
7. गोरे एम0एस0 एण्ड देसाई, आई0पी0 (1970) : द स्कोप ऑफ ए सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन इन एम0 एस0 गोरे, आई0पी0 देसाई एण्ड सुमा चिटनीस (राम्पा) सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन।